International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 3, March- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

संस्कृत वाङ्मय और पुराण –साहित्य

डॉ. मोहन लाल मेघवाल
सहायक आचार्य, संस्कृत विभाग,
राजकीय स्ना. महाविद्यालय प्रतापगढ,
राजस्थान –312605

प्राचीन व्यापक तथा विशाल संस्कृत साहित्य को स्वरूप तथा समय आदि की दृष्टि से दो भागों में विभाजित किया जाता है – (1) वैदिक साहित्य एवं (2) लौकिक साहित्य। वैदिक साहित्य प्राचीन अशेष विश्व वाङ्मय का प्रतिनिधित्व करता है, जिससें महती ज्ञानराशि संनिहित है। इसके अन्तर्गत संहितायें (ऋक्, यजुः, साम और अथर्व), ब्राह्मण ग्रन्थ, आरण्यक, उपनिषद् तथा वेदांग ग्रहण किए जाते है। वैदिक साहित्य में ही हमें संस्कृत भाषा का मूल स्वरूप दिखाई देता है। साथ ही भारतीय पुरातन संस्कृति का भी परिचय मिलता है। लौकिक संस्कृत साहित्य वैदिक संस्कृत का ही सर्वांग सुविकसित स्वरूप है, इसके अन्तर्गत महाकाव्य, गीति काव्य, नाटक, गद्य साहित्य, कथा, नीति तथा चम्पू ग्रन्थों को ग्रहण किया जाता है। साहित्य के विस्तृत अर्थ में तो व्याकरण ,गणित, ज्योतिष, दर्शन, धर्मशास्त्र, नीतिशास्त्र, आयुर्वेद, वास्तुकला, छन्दशास्त्र आदि का ग्रहण हो जाता है किन्तु यहाँ हमें साहित्य का एकदेशीय अर्थ अभिप्रेत है जिससें काव्यादि का बोध होता है, संस्कृत साहित्य के ये दोनों भाग भाषा, व्याकरण, छन्द, प्रतिपाद्य–वस्तु आदि की दृष्टि से परस्पर पर्याप्त भिन्न हैं।

वेद शब्द से तात्पर्य वैदिक साहित्य से है। वेद के मुख्यतः दो विभाग किये जाते है – संहिता तथा ब्राह्मण। वस्तुतः वेद शब्द का प्रयोग ही मंत्र तथा ब्राह्मण दोनो के लिए सम्मिलित रूप में ही किया जाता रहा है –*'मंत्रब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम्'* (आपस्तम्ब–यज्ञपरिभाषा,३१) जिसका मनन किया जाये, उसे 'मंत्र' कहते है (मननात् मंत्राः),

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 3, March- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

मंत्रों के समूह को संहिता कहा जाता है, जिसमें स्तुति, यज्ञपरक, गेय एवं रक्षाविधायक मंत्र–तंत्रों का संकलन होता है, ऐसे मंत्र समूह को संहिता कहते है।

संहिताएँ संख्या में चार है –

(1) ऋक् संहिता

(2) यजुः संहिता

(3) साम संहिता

(4) अथर्व संहिता

मंत्रों के विस्तृत व्याख्यापरक ग्रंथ ब्राह्मण है। '*ब्रह्मन्* ' शब्द के विविध अर्थों में से एक अर्थ 'यज्ञ' भी है। अतः यज्ञ की विविध क्रियाओं का वर्णन करने वाले ग्रन्थ ब्राह्मण ग्रंथ कहलाए। इसमें सूक्तों के विनियोग कर्मकाण्ड एवं स्तुतियों तथा उपासना के साथ–साथ ब्रह्म पर भी विचार किया गया है। अतः इस प्रकार की ग्रंथ राशि को 'ब्राह्मण' कहते है। ब्राह्मण के तीन भाग है – (1)ब्राह्मण (2)आरण्यक और (3)उपनिषद् । ब्राह्मण ग्रंथों में संहिताओं के मंत्रों की विशद व्याख्या के साथ–साथ यज्ञों का विस्तारपूर्वक विवेचन किया गया है। आरण्यक ग्रंथ वे है, जो जन–साधारण से दूर जंगल में पढ़े जाते थे। इनमें यज्ञों के आध्यात्मिक रूप का विवेचन है। उपनिषद् से तात्पर्य ब्रह्मविद्या से हैं, जिसका अनुशीलन करने से प्राणी संसार के प्रपंचों से छूटकारा पाकर अनन्त सुख का अधिकारी बनता है। उपनिषद् वैदिक साहित्य का अन्तिम भाग माना गया है। इसलिये उसे 'वेदान्त' भी कहते है। उपनिषदों का सारांश भगवद्गीता है।

संहिता तथा ब्राह्मण कर्मकाण्ड और आरण्यक उपासना काण्ड के अन्तर्गत माने जाते है। उपनिषदों का प्रधान विषय ज्ञान का विवेचन करना है। अतः वे '*ज्ञानकाण्ड* ' के नाम से

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 3, March- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

प्रसिद्ध है। आजकल वेद से केवल संहिता का ग्रहण होता है और ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद् – ये स्वतंत्र वैदिक साहित्य के अंग बन गये है। इस तरह समस्त वैदिक वाड्मय को चार अंगो में विभाजित किया जाने लगा। वेद विभाजन क्रम निम्नानुसार स्पष्ट है –

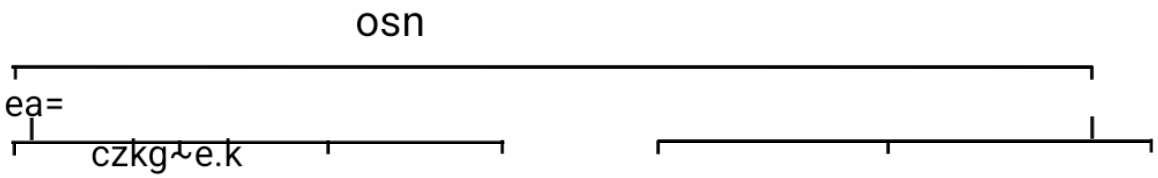

लौकिक साहित्य के विविध साहित्यों में पुराण का स्थान सर्वोपरि है। वैदिक साहित्य के उपरान्त हिन्दु धर्म को जिन ग्रंथों ने सर्वाधिक प्रभावित किया है, उनमें पुराणों का स्थान अग्रगण्य है।

आचार्य बलदेव उपाध्याय का मत है कि 'पुराण लौकिक शास्त्र है। यह वेद से भिन्न, परन्तु तदनुकूल शास्त्र माना जाता है। वेद के समान इसका स्वरूप सदा–सर्वदा के लिए निश्चित नहीं किया गया है, प्रत्युत यह समय परिवर्तन के संग में तथा उसके प्रभाव में आकर स्वयं परिवर्तनशील है। इसलिए तंत्रवार्तिक (१ध्३ध्३) वेद को अकृत्रिम, पुराण को कृत्रिम बतलाता है।[1]

विद्वानों के मतानुसार पुराणों और वैदिक साहित्य का सम्बन्ध अधिकांश रूप में पोष्य–पोषक के रूप में दिखाई देता है।

वेद नित्य और अनादि है, क्योंकि वे न तो मनुष्य रचित और न ही ईश्वर रचित है। आचार्यो के मतानुसार शब्द और ध्वनि में भेद है। वेद की ध्वनि अनित्य है, उच्चारण करने पर ही सुनी जाती है, लेकिन वेदों के शब्द नित्य है, उच्चारण न करने पर भी वेद के शब्द

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 3, March- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

विद्यमान रहते है, सृष्टि के समय ईश्वर के द्वारा वेद पुराण का आविर्भाव हुआ। वेद का गूढ़ अर्थज्ञान तपस्या के द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है। वेद के इस निगूढ़ अर्थ को लक्ष्य करके भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है– *'वेदान्तकृद्वेदविदेव चाहम्'* (११.१५)। इस प्रकार वेद के निगूढ़ अर्थ को सरल भाषा में समझाने के लिए ही पुराण, रामायण और महाभारत अखण्ड धर्म का प्रतिपादन करते है। इसी प्रकार उपनिषदों के निगूढ़ तत्व को पुराणों में विस्तृत रूप से बताया गया है।

मत्स्यपुराण में कहा गया है कि ब्रह्मा ने समस्त शास्त्रों में सर्वप्रथम पुराण का ही स्मरण किया और उसके बाद उनके मुख से वेद प्रादुर्भुत हुए।[2]

पुराणं सर्वशास्त्राणं प्रथमं ब्रह्माणास्मृतम्।

अनन्तरं च वक्त्रेभ्यो वेदास्तस्य विनिर्गताः।।

नारदीय पुराण[3] में पुराणों को वेद से अधिक महत्व दिया गया है और वेदों को पुराण में ही प्रतिष्ठित माना गया है। नारदीय पुराण की मान्यता है कि वेद में ज्योतिष सम्बन्धी ग्रहसंचार तथा अन्य व्यावहारिक बातों का सर्वथा अभाव है।

'न वेदे ग्रहसंचार न शुद्धिः कालबोधिनी।'

देवीभागवत[4] में वेदों से अधिक पुराणों को महत्व देते हुए बताया गया है कि श्रुति और स्मृति नेत्र है, परन्तु पुराण तो धर्मपुरूष का हृदय है।

श्रुतिस्मृती उभे नेत्रे पुराणं हृदयं स्मृतम्।
एतत्त्रयोक्त एव स्याद्धर्मो नाऽन्यत्र कुत्रचित्।।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 3, March- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

पुराण शब्द का अथर्ववेद [5] में दो स्थानों पर उल्लेख हुआ है, इससे माना जा सकता है कि पुराणों का अथर्ववेद के समय में अस्तित्व उपस्थित था।

(क) *ऋचः सामानि छन्दांसि पुराणं यजुषा सह।*
उच्छिष्टाज्जज्ञिरे सर्वे दिवि देवा दिविश्रिता।।

(ख) *तमितिहासश्च पुराणं च।*

सर्वविदित है कि वैदिक वाङ्मय में संहिताओं के अलावा ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद् की गणना भी की गई है। इनसे हमें पुराण के बारे में विशेष सूचनाएं प्राप्त होती है। यजुर्वेद के शतपथ ब्राह्मण [6] में पुराण के उदय की महत्वपूर्ण गाथा प्राप्त होती है, जिसका 'इतिहासपुराणम्' इस सम्मिलित रूप में एक समस्त पद द्वारा निर्देश किया गया है।

'मध्वाहुतयो ह वा एता देवानां यदनुशासनानि विद्यावाकोवाक्यमितिहासपुराणं गाथानाराशंसस्य।'

अथर्ववेद के गोपथ [7], ब्राह्मण में पुराण इतिहास को अलग–अलग बताया गया है।

'एवमिमे सर्वे वेदा निर्मिताः स–ससंकल्पाः सरहस्याः सब्राह्मणाः सोपनिषत्काः सान्वाख्यानाः सपुराणाः।'

वैदिक वाङ्मय में आरण्यक और उपनिषद् ब्राह्मण साहित्य का अन्तिम स्वरूप है। आरण्यक और उपनिषदों में ब्राह्मण ग्रन्थों से अधिक विकसित रूप में पुराणों का वर्णन प्राप्त होता है। तैत्तिरीय आरण्यक [8] में पुराण शब्द के लिए 'पुराणानि' ऐसा बहुवचन पद का प्रयोग प्राप्त होता है, इससे पुरागत 'आख्यानों' की बहुलता सिद्ध होती है।

'ब्रह्मयज्ञप्रकरणे यद् ब्राह्मणानितिहासान् पुराणानि कल्पान् गाथा नाराशंसी भेदाहुतयो देवानामभवन्।'

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 3, March- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

बृहदारण्यक उपनिषद्[9] में पुराण को वेद के समान बताते हुए कहा गया है कि इतिहास पुराण महाभूत परमेश्वर के श्वासरूप है।

'अस्य महतो भूतस्य निःश्वसितमेतद् यद् ऋग्वेदो, यजुर्वेदः, सामवेदो, अथर्वांगिरस इतिहासः पुराणम्।

छान्दोग्य उपनिषद्[10] में इतिहास–पुराण का नाम वेदों के साथ स्पष्ट रूप से दिया है। वहाँ प्रयुक्त पंचम् पद से पुराण का पंचम् वेद होना सिद्ध हुआ है।

आथर्वणं चतुर्थमितिहासपुराणं पंचमं वेदानां वेदम्।'

इस प्रकार पंचम वेद के रूप में प्रतिष्ठित पुराण–विद्या वेदों के समान ही अनादि और नित्य है। वैदिक साहित्य की गूढ़ता को सरलतम रूप में समझने तथा वैदिक साहित्य के अर्जन–वर्धन, प्रचार–प्रसार में पुराणों का विशेष योगदान है।

–:: सन्दर्भ सूची ::–

1 पुराण–विमर्श, पृष्ठ–39
2 मत्स्यपुराण – 53/3
3 नारदीय पुराण, 2–24–19
4 देवीभागवत –11–2–21
5 अथर्ववेद–11–7–24, 15–6–11
6 शतपथ ब्रा., 11–5–68
7 गोपथ ब्रा., 1–2–10
8 तै.आ., 2–9
9 बृ.उ., 2–410
10 छा.उ., 7–1–1